इमाम हसन असकरी (अ0) ग़ैरों की नज़र में

जनाब मुहम्मद सादिक़ ख़ान साहब जौनपूरी

रबीउस्सानी महीना 232 हि0 की दसवीं तारीख़ थी जब इमामत के सिलसिले का ग्यारहवाँ वारिस इस दुनिया में तशरीफ लाया। और मदीने की सरज़मीन उसकी इमामत के नूर से रौशन हो गई। पाक नाम हसन और लक़ब ज़की, असकरी और इब्ने रिज़ा मिला। पुकारा जाने वाला नाम अबुमुहम्मद था। बुजुर्ग माँ का नाम हदीसा या सलील था जिनके बारे में इमाम अली नक़ी (अ0) ने फरमाया कि वह कमियों और बुराइयों से बिलकुल पाक है। आपकी पैदाइश के वक़्त इमाम अली नक़ी (अ0) की मुबारक उम्र 16 साल थी। असकरी लक़ब होने की वजह यह बयान की गई है कि आपके महल्ले का नाम असकर था सामरा में आप रहते थे और शायद सामरा इस बुनयाद पर कहा जाता है कि वहाँ उस वक़्त के बादशाह ने छावनी बना रखी थी।

इमाम की पैदाईश के वक़्त बादशाह वासिक़ बिल्लाह था। इसके बाद 247 हि0 तक मुतवक्किल की हुकूमत रही। 247 हि0 में मुस्तंसिर बिन मुतवक्किल हाकिम हुआ। 248 हि0 में मुस्तईन की हुकूमत बनी। 252 हि0 में मुअ्तिज़ बिल्लाह कुर्सी पर बैठा। और उसी ने इमाम अली नक़ी (अ0) को धोखे से ज़हर देकर शहीद किया। फिर 255 हि0 में मुहतदी और 256 हि0 में मुअ्तमद अलल्लाह की हुकूमत बनी और उसी ने इमाम हसन असकरी (अ0) को शहीद कराया।

इसमें शक नहीं कि परवरदिगारे आलम ने जिस दौर में जिसे नुमाइन्दा बनाया सारी काएनात में उसका जवाब नहीं मिला। और फ़ज़ीलतें और ख़ूबियाँ उसकी इस शान से लोगों के सामने आईं कि दुश्मनों को भी इक़रार करना पड़ा। वह मुसीबतों में रहे, क़ैदख़ाने में रहे लेकिन उनके किरदार की किरनें दुनिया के दिलों तक पहुँचती रहीं। यहाँ हर शख़्स उसी शान वाला नज़र आयेगा। जिसे देखो फ़ज़ीलतों का ठाठें मारता हुआ समुन्द्र, जिसे दोखों ख़ूबियों का ख़ज़ाना, दुनिया की कौन सी ख़ूबी है जो यहाँ नहीं है।

दुनिया के हुक्मरानों ने मासूम इमामों (अ0) की ज़िन्दगियों पर बेपनाह पहरे बिठाए और क़ैद व सज़ाओं में रखकर तकलीफ व मुसीबत की इन्तेहा कर दी। लेकिन जिसने एक बार उनके किरदार को समझ लिया, वह दीवाना हुए बिना न रह सका। कितने काफिरों को मुसलमान बना दिया, कितने मुनाफ़िक़ों को ईमान वाला बना दिया। कितने दिमाग़ों को मुहब्बत की रौशनी दी। दरबार में क़त्ल के इरादे से बुलाया गया और जब दरबार में दाख़ला होता है तो वक़्त का हाकिम इज़्ज़त देने के लिए खड़ा हो जाता है। गुलामों को गर्दन मारने के लिये कहा गया है लेकिन जब आप तशरीफ लाते हैं तो गुलाम झुक कर सलाम

करते हैं।

अब्दुल्लाह बिन ख़ाक़ान के बेटे अहमद बिन अब्दुल्लाह के सामने एक बार अलवी सादात की बात हुई तो उसने कहा पूरी ज़मीन पर सादात में इमाम हसन असकरी (अ0) से बेहतर और अफ़ज़ल कोई नहीं है। उनका इल्म, उनका तक़वा, उनका दुनिया से अलग रहना रश्क करने के क़ाबिल है। लोगों ने कहा यह आप क्या कह रहे हैं। उसने जवाब दिया यह मेरा ज़ाती तजुर्बा है एक दिन मैं अपने बाप के साथ दरबार में खड़ा था कि ख़ादिमों ने ख़बर दी इमाम हसन असकरी (अ0) तशरीफ ला रहे हैं। यह सुनना था कि मेरे बाबा जान उनके इस्तेक़बाल के लिए दौड़ पड़े और बहुत ही इज़्ज़त से लाकर अपने पास बिठाया। मैंने इससे पहले किसी की इस तरह से इज़्ज़त करते हुए नहीं देखा था। मुझे बहुत हैरत हुई कि बाबा को क्या हो गया है वह हज़रत बैठे रहे और मेरे बाबा बातचीत में बराबर यही कहते रहे मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान, इसी बीच में किसी ने ख़बर दी कि ख़लीफा तशरीफ ला रहे हैं। लोग इस्तेक़बाल के लिए दौड़ पड़े। लेकिन बाबा पर कोई असर नहीं हुआ। यहाँ तक कि सवारी मकान के अहाते में आ गई। तो बाबा ने इमाम से कहा कि अब बेहतर यह है कि आप तशरीफ ले जाएं।

मुझे बड़ी हैरत हुई। रात को मैंने बाबा से सवाल किया यह बुजुर्ग कौन थे जिनके इस्तेक़बाल के लिए आप बेक़रार थे। अब्दुल्लाह ने कहा यह शियों के इमाम हैं। और बड़ी ख़ूबियों और करामतों वाले हैं। इनके बाप इमाम अली नक़ी (अ0) भी बेपनाह ख़ूबियों के मालिक थे। अहमद कहता है कि मेरे दिल में ख़याल पैदा हुआ कि न जाने मेरे बाबा को क्या हो गया है कि इस तरह से बातचीत करते हैं। और मैंने तैय कर लिया कि अब मैं खुद इन बुजुर्ग के हालात को मालूम करूँगा और देखूँगा। बाप के बयान में कहाँ तक सच्चाई है। एक ज़माने तक मैं हालात मालूम करता रहा और हज़रत (अ0) की कमियों को ढूँढता रहा, लेकिन मैंने महसूस किया कि जैसे–जैसे उनके हालात को क़रीब से देखता रहा, उनकी बड़ाई नज़रों में और बढ़ती रही और मालूम हो गया कि यह बुजुर्ग उसी शान और इज़्ज़त के हक़दार है।

इस तरह की बेशुमार बातें तारीख़ में मौजूद हैं जहाँ इमाम की बड़ाई को ग़ैरों ने भी क़बूल किया है।

मुहम्मद अय्याश लिखते हैंः–

एक दिन कुछ लोग बैठे हुए इमाम हसन असकरी (अ0) की फ़ज़ीलतें बयान कर रहे थे। महफ़िल में एक अहलेबैत (अ0) का दुश्मन भी मौजूद था उसने कहा आप लोग इतनी फ़ज़ीलतें बयान कर रहे हैं। मैं तो जब जानूँ कि मैं एक सादे काग़ज़ पर ख़ाली क़लम से बिना रोशनाई के मसअला लिख दूँ और वह जवाब दे दें। लोगों ने कहा ज़रूर। उसने मसअला लिख कर लिफाफ़े में बन्द कर दिया और हज़रत के पास भेज दिया। अब जो जवाब आया तो मसअले का हल भी लिखा हुआ था और पूछने वाले का नाम उसके बाप के नाम के साथ लिखा हुआ था। वह शख़्स हैरत में पड़ गया और फ़ौरन मज़हबे हक़ क़बूल कर लिया।

□□□